

दक्षिण-पश्चिम मानसून 2010 : एक समीक्षा * (1 जून से 30 सितम्बर 2010)

जून-सितंबर 2010 के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून ने भारत के मौसम विभाग के दीर्घकालिक औसत (एलपीए) (1941-1990 के दौरान 89 से.मी की औसत वर्षा) से 2 प्रतिशत आगे निकल गई जो कि जून-सितंबर 2010 के दौरान 22 प्रतिशत की कम वर्षा की तुलना में पिछले एक दशक में दूसरा सबसे अधिक स्तर है। यह कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ जो कि हाल के वर्षों में अधिकाधिक आघात सहनीय और विभेदीकृत हो गई हैं, यद्यपि वे अभी भी वर्षा पर निर्भर हैं के विकास के संबंध में पूर्वसूचना देता है। इसके परिणामस्वरूप, कुछ तिलहनों को छोड़कर 2010-11 खरीफ के दौरान बुआई का क्षेत्र 2009-10 और साथ ही साथ 2008-09 के दौरान बुआई किए गए क्षेत्र से अधिक था। प्रथम अग्रिम आकलनों के अनुसार उन्नत बुवाई खरीफ फसलों के अच्छे उत्पादन में परिलक्षित हुई, जिसने सभी फसलों में उत्पादन बढ़ाया नामतः खाद्यान्न और मोटे अनाजों एवं दालों की इसकी उपश्रेणियां, जिनकी वृद्धि दर क्रमशः 10.4 प्रतिशत, 19.5 प्रतिशत और 39.5 प्रतिशत थी। पिछले वर्ष के उत्पादन की तुलना में खरीफ तिलहनों में 10.3 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है। परिणामतः ये अनुकूल गतिविधियां खरीफ दालों, जिनके उत्पादन में 2009-10 की तुलना में 2010-11 में लगभग 2 मिलियन टन की वृद्धि होने की संभावना है, के संबंध में भी खाद्य पदार्थों की कीमतों पर पड़ने वाले दबावों को सम्भवतः कम करेगा।

परिचय

भारतीय प्रायद्वीप अपनी विशिष्ट स्थिति के चलते प्रमुख रूप से कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था होने के कारण वर्षा, जिसे कि मानसून कहा जाता है की अनिश्चितताओं पर निर्भर रहता है। वर्षा सीधे तौर पर

* संरचनात्मक विषय प्रभाग, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, भारतीय रिजर्व बैंक में तैयार किया गया। दक्षिण-पश्चिम मानसून 2009: एक समीक्षा (1 जून से 30 सितम्बर 2009) पर पिछला लेख आरबीआइ बुलेटिन के नवम्बर 2009 के अंक में प्रकाशित किया गया था।

बुआई को प्रभावित करती है, जो परिणामस्वरूप फसल उत्पादन को प्रभावित करती है। उपलब्ध अद्यतन आंकड़ों के अनुसार (2007-08), केवल 42.6 प्रतिशत का फसल क्षेत्र सिंचित था। परिणामतः कम वर्षा एवं वर्षा के असमान वितरण वाले वर्ष का संबंध हमेशा से फसल/कृषि उत्पादन में गिरावट से रहा है (सारणी 1)।

प्रमुख रूप से भारत में वर्षा/मानसून की प्रवृत्ति को दो मौसमों में विभक्त किया जा सकता है यथा दक्षिण-पश्चिम या ग्रीष्मकालीन मानसून, जिसमें जून से सितंबर तक की अवधि शामिल होती है और उत्तर-पूर्व या शीतकालीन मानसून, जिसमें अक्टूबर से दिसंबर तक की अवधि शामिल होती है। ग्रीष्मकालीन मानसून देश में लगभग 70-80 प्रतिशत वर्षा के लिए जिम्मेवार होता है। दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान वर्षा का स्थानिक और कालगत वितरण खरीफ फसल की सफलता या विफलता के लिए, जिसकी बुआई अनिवार्य रूप से जुलाई-अगस्त में होती है, महत्वपूर्ण

होती है। वर्ष 2009 को छोड़कर, 2005 से 2010 तक की चार वर्षों की अवधि के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान वर्षा सामान्य स्तर के करीब रही। चालू वर्ष के दौरान वर्षा दीर्घावधि औसत (एलपीए) से अधिक होने के कारण सम्भवतः खाद्यान्नों के समग्र उत्पादन की बढ़ोत्तरी में सहयोग करेगी। इन गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में यह लेख जून-सितंबर 2010 के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून के कार्यनिष्पादन की एक विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत करता है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून 2010 मुख्य-मुख्य बातें

- देश के लिए समग्र रूप से मौसम (जून-सितंबर)के लिए वर्षा अपने 89 से.मी. के दीर्घकालिक औसत (एलपीए) का 102 प्रतिशत थी।
- मौसमी वर्षा उत्तर-पश्चिमी भारत की तुलना में अपने एलपीए का 112 प्रतिशत, केन्द्रीय भारत की तुलना में अपने एलपीए का 104 प्रतिशत, दक्षिण प्रायद्वीप की तुलना में अपने एलपीए का 118 प्रतिशत और उत्तरी-पश्चिमी भारत की तुलना में अपने एलपीए का 82 प्रतिशत थी।
- समस्त देश में मासिक वर्षा जून में एलपीए का 84 प्रतिशत, जुलाई में एलपीए का 103 प्रतिशत, अगस्त में एलपीए का 106 प्रतिशत और सितंबर में एलपीए का 113 प्रतिशत थी।
- 597 मौसमी जिलों जिनके संबंध में आंकड़े उपलब्ध हैं, 173 जिलों (29 प्रतिशत) में अधिक वर्षा हुई, 240 जिलों (40 प्रतिशत) में सामान्य वर्षा हुई, 173 जिलों (29 प्रतिशत) में कम वर्षा हुई और बचे हुए 11 जिलों (2 प्रतिशत में मौसम के दौरान अल्प वर्षा हुई)।

सारणी 1 : दक्षिण - पश्चिम मानसून वर्षा और खरीफ उत्पादन

वर्ष	आइएमडी का पूर्वानुमान (एलपीए का %)	वास्तविक वर्षा (एलपीए का %)	खरीफ खाद्यान्न उत्पादन (% परिवर्तन)
1	2	3	4
1997	92	102	-2.4
1998	99	106	0.5
1999	111	96	2.5
2000	99	92	-3.2
2001	98	92	9.8
2002*	101	81	-22.2
2003	96	102	34.1
2004	100	87	-11.7
2005	98	99	6.3
2006	92	99	0.6
2007	93	105	1.6
2008	99	98	-2.8
2009*	93	78	-12.1
2010	102	102	10.4#

* सूखा वाला वर्ष

खरीफ 2010-11 के प्रथम अग्रिम आकलनों के अनुसार।

स्रोत : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आइएमडी), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

- 17 मई को दक्षिण-पश्चिम मानसून अंदमान समुद्र की ओर अग्रसर हुआ। केरल में मानसून 1 जून की सामान्य तिथि से एक दिन पहले अर्थात् 31 मई को ही आ गया और पूरे देश में 15 जुलाई की इसकी सामान्य तिथि के 9 दिन पहले अर्थात् 6 जुलाई को ही आ गया। मानसून की वापसी में भी देरी हुई और ये 1 सितंबर की अपनी सामान्य तिथि की तुलना में 27 सितंबर को राजस्थान से आरंभ हुआ।
- यद्यपि दो तीव्र प्रणालियां थीं अर्थात्, बंगाल की खाड़ी के ऊपर तीव्र चक्रवातीय तूफान (फेट, 31 मई-2 जून), समस्त मानसून मौसम में मानसून में कोई कमी नहीं आई। इस तरह से 2002 के पश्चात 2010 ही एकमात्र ऐसा वर्ष है जब संपूर्ण मौसम के दौरान मानसून में कमी का दौर नहीं था।
- केरल के संबंध में मानसून की शुरुआत के संबंध में पूर्वानुमान वर्ष 2005 में पहली बार इसके जारी किए जाने के बाद लगातार छठवें वर्ष भी ठीक रहा है।
- 2010 के दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा के संबंध में जारी किए गए ज्यादातर परिचालनगत दीर्घकालिक पूर्वानुमान सही रहे हैं। पूरे मौसम के लिए, मौसम के दूसरे अर्धभाग के लिए और जुलाई, अगस्त और सितंबर महीनों के लिए देशभर के लिए वर्षा का पूर्वानुमान बिलकुल सही रहा है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून 2010-11 का पूर्वानुमान

भारत का मौसम विज्ञान विभाग वर्ष 2003 से दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा के लिए दो चरणों में पूर्वानुमान करने की नीति को अपनाता रहा है। दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा का पहला पूर्वानुमान अप्रैल के महीने में किया जाता है, जिस में मार्च तक के आंकड़ों का उपयोग

किया जाता है। यह मई तक के आंकड़ों का उपयोग करते हुए जून के महीने में उद्यतन पूर्वानुमान भी करता है।

देश में ही बने सांख्यिकीय मॉडल के आधार पर, 14 मई 2010 को यह पूर्वानुमान किया गया था कि ± 4 दिनों की मॉडल त्रुटि के साथ केरल में मानसून 30 मई 2010 को आरंभ हुआ। पूर्वानुमान सही साबित हुआ क्योंकि केरल में मानसून की शुरुआत 31 मई 2010 से हुई जो कि पूर्वानुमानित दिन से एक दिन बाद में थी। इस तरह से 2005 में जारी किए जाने के बाद से केरल में मानसून की शुरुआत के संबंध में यह लगातार छठवां सही परिचालनगत पूर्वानुमान है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान विभिन्न अवधियों में वर्षा से संबंधित आइएमडी के पूर्वानुमान सारणी में दिए गए हैं। सभी मासिक पूर्वानुमान सही साबित हुए क्योंकि वास्तविक वृष्टि एलपीए का क्रमशः 103 प्रतिशत, 106 प्रतिशत और 113 प्रतिशत थी।

सारणी 2 : दीर्घावधिक पूर्वानुमान और वास्तविक वर्षा

क्षेत्र	अवधि	जारी करने की तिथि	पूर्वानुमान (एलपीए का प्रतिशत)	वास्तविक वर्षा (एलपीए का प्रतिशत)
1	2	3	4	5
अखिल भारत	जून से सितंबर	23 अप्रैल 2010	98 \pm 5	102
अखिल भारत	जून से सितंबर	25 जून, 2010	102 \pm 4	112
उत्तर पश्चिमी भारत	जून से सितंबर		102 \pm 8	104
केंद्रीय भारत	जून से सितंबर		99 \pm 8	82
पूर्वोत्तर भारत	जून से सितंबर		103 \pm 8	118
दक्षिण प्रायद्वीप	जून से सितंबर		102 \pm 8	103
अखिल भारत	जुलाई		98 \pm 9	106
अखिल भारत	अगस्त		101 \pm 9	109
अखिल भारत	अगस्त से सितंबर		30 जुलाई, 2010	107 \pm 7
अखिल भारत	सितंबर	27 अगस्त, 2010	115 \pm 15	

स्रोत: भारत मौसम विज्ञान विभाग

केन्द्रीय भारत के ऊपर वास्तविक मौसमी वर्षा पूर्वानुमान की सीमा के भीतर थी और उत्तर पश्चिमी भारत के ऊपर पूर्वानुमान की सीमा से थोड़ा आधिक थी। तथापि, उत्तर-पूर्वी भारत और दक्षिण प्रायद्वीप पर मौसमी वृष्टि के पूर्वानुमान एकदम सही नहीं थे क्योंकि उत्तर-पूर्वी भारत में कम वृष्टि हुई और दक्षिण प्रायद्वीप पर अधिक वृष्टि हुई जबकि इसके विपरीत दोनों ही क्षेत्रों के लिए सामान्य वृष्टि का पूर्वानुमान किया गया था।

वर्षा का वितरण : दक्षिण-पश्चिम मानसून

पूरे देश में यह मौसम एलपीए के 102 प्रतिशत पर क्षेत्र भारतीय वर्ष के साथ समाप्त हुआ। पिछले दशक में वर्षा का यह दूसरा सबसे बड़ा स्तर है।

स्थानिक वितरण

जून 2010 के दौरान देश के केन्द्रीय, उत्तरी ओर पूर्वी उपप्रभागों में जमानसून के देर से आने के कारण एक वर्ष में एक व्यापक गिरावट देखी गई। तथापि, जुलाई 2010 के दौरान देश में वर्षा की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ, विशेषतौर पर माह के दूसरे हिस्से में। देश के पूर्वी और उत्तर पूर्वी क्षेत्रों के कुछ उपप्रभागों को छोड़कर जहां वर्षा बहुत कम हुई, ज्यादातर उपप्रभागों में सामान्य या अधिक वर्षा हुई। अधिक और कम वर्षा वाले उपप्रभागों की संख्या जुलाई (अधिक 13 और कम 5) की तुलना में अगस्त (अधिक 18 और कम 9) में अधिक था। अगस्त के दौरान उत्तर-पूर्व और प्रायद्वीपीय भारत के ज्यादातर उपसंभागों में अधिक वर्षा हुई और देश के पूर्वी भागों के उपसंभागों में कम वर्षा हुई। तथापि, उत्तर पूर्वी हिस्सों के उपसंभागों में सामान्य अथवा अधिक वर्षा हुई।

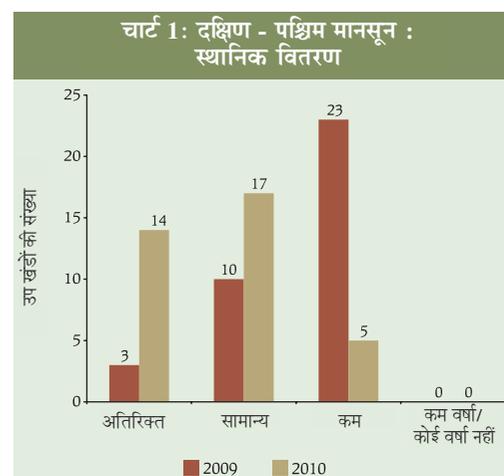
36 मौसमी उपसंभागों में संचयी वर्षा 31 उपसंभागों में अधिक / सामान्य थी और 5 उपसंभागों

में कम/न्यून/कोई वर्षा नहीं थी। पिछले वर्ष की संगत अवधि के दौरान स्थानिक वितरण की स्थिति में क्रमशः 13 और 23 उप प्रभाग थे। 1 जून से 30 सितम्बर 2010 तक संचयी मौसमी वर्षा 14 मौसमी उपप्रभागों में अधिक (देश के कुल क्षेत्र का 43 प्रतिशत) और 17 मौसमी उपप्रभागों में सामान्य (देश के कुल क्षेत्र का 42 प्रतिशत) थी। पांच उपप्रभाग (पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, गंगातटीय पश्चिम बंगाल और असम और मेघालय) जो देश के कुल क्षेत्र के 15 प्रतिशत का निर्माण करता है, में कम वर्षा हुई (चार्ट 1, सारणी 3 और विवरण I)।

जिले-वार, 597 मौसमी जिले जिनके संबंध में आंकड़े उपलब्ध थे, उनमें से 69 प्रतिशत मौसमी जिलों में अधिक /सामान्य वर्षा हुई और बकाया 31 प्रतिशत में मौसम के दौरान कम/न्यून वर्षा हुई (विवरण II)। पिछले वर्ष के लिए संगत आंकड़े क्रमशः 41 प्रतिशत और 59 प्रतिशत थे।

कालगत वितरण

जून के सभी सप्ताहों के दौरान साप्ताहिक वर्षा एलपीए से कम थी। जुलाई के महीने में साप्ताहिक वर्षा



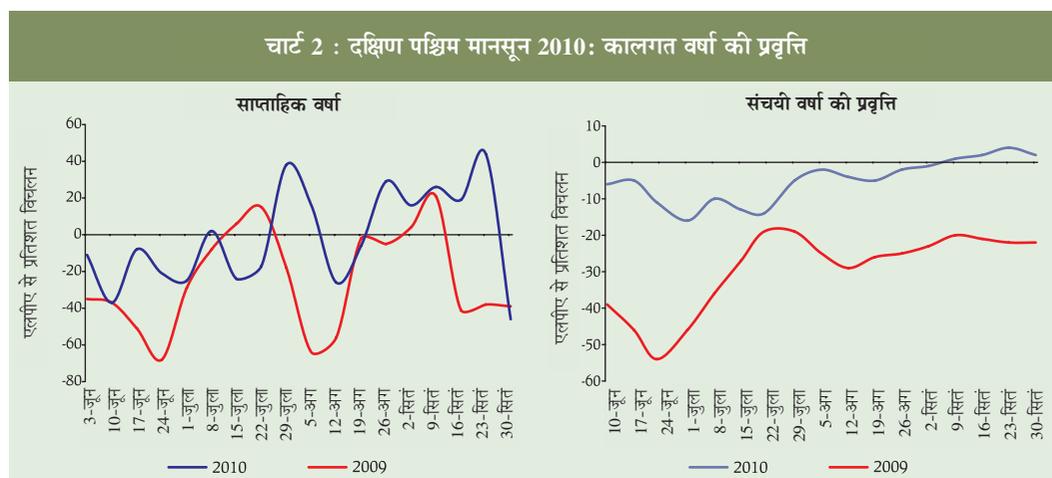
सारणी 3: वर्षा की श्रेणी के अनुसार उप-खंडों का वितरण	
वर्षा की श्रेणी	उप-खंड
1	2
अधिक	उत्तराखंड, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली, जम्मू और काश्मीर, पश्चिमी राजस्थान, सौराष्ट्र और कच्छ, कोंकण और गोआ, मध्य प्रदेश, मराठवड़ा, विदर्भ, तटीय आंध्र प्रदेश, तेलंगणा, रायल सीमा, तमिलनाडु और पुदुचरी और उत्तरी अंतरिक कर्नाटक
सामान्य	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा, उप हिमायल पश्चिम बंगाल और सिक्किम, उड़ीसा, पश्चिम उत्तर प्रदेश, पंजाब, हिमांचल प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, पश्चिमीय प्रदेश, पूर्वीय मध्य प्रदेश, गुजरात क्षेत्र, दमण और नागर हवेली, छत्तीसगढ़, तटीय कर्नाटक, दक्षिणी अंतरिक कर्नाटक, केरल और लक्षद्वीप
कम	असम और मेघालय, गांगेय पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश

टिप्पणी : अधिक: +20 प्रतिशत अथवा अधिक; सामान्य: +19 प्रतिशत से - 19 प्रतिशत; कम: - 20 प्रतिशत से - 59 प्रतिशत; छिटपुट: -60 प्रतिशत से - 99 प्रतिशत; शून्य वर्षा: - 100 प्रतिशत (सभी दीर्घावधि औसत के संबंध में)।
स्रोत : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

पहले और आखिरी हफ्ते के दौरान एलपीए से अधिक थी और इन दोनों सप्ताहों के दौरान दो सप्ताहों में एलपीए से कम थी। अगस्त के दूसरे और तीसरे सप्ताह और सितंबर के आखिरी सप्ताह के दौरान वर्षा कम थी। इन तीन सप्ताहों को छोड़कर मौसम (अगस्त-सितंबर) के दूसरे अर्ध भाग के दौरान साप्ताहिक वर्षा एलपीए से अधिक थी। संचयी वर्षा का वितरण मौसम के शुरुआती हिस्से के दौरान काफी गिरावट दर्शाता है। परिणामस्वरूप, संचयी साप्ताहिक वर्षा अगस्त के अंत तक एलपीए से कम बनी रही। केवल सितंबर के प्रथम सप्ताह के दौरान ही ऐसा हुआ कि संचयी साप्ताहिक

वर्षा एलपीए से अधिक हो गई और मौसम के अंत तक वैसी ही बनी रही (चार्ट 2)।

मानसून के कमजोर चरण के दौरान अव्यवस्थित संवहनी गतिविधि और पश्चिमी हवाओं में मध्य अक्षांश क्षेत्र में बन रहे कम दबाव के क्षेत्र के साथ मानसून करेंट के मिलने के कारण कुछ राज्यों जैसे कि राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश में बाढ़ की स्थिति बन गई थी। कम दबाव वाले क्षेत्रों ने गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, कर्नाटक और उड़ीसा के कुछ हिस्सों में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

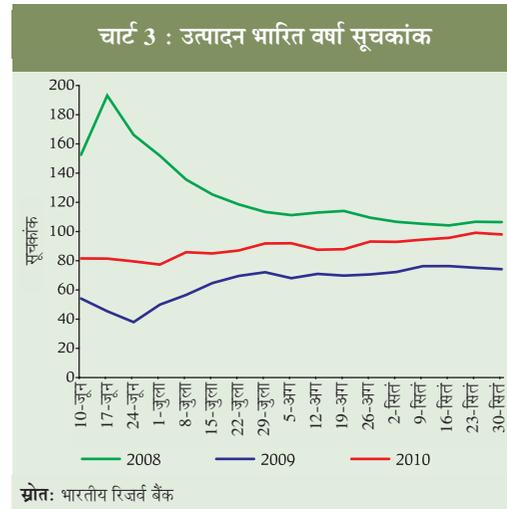


उत्पादन भारित वर्षा सूचकांक

खाद्यान्न उत्पादन भारित सूचकांक (पीआरएन) का निर्माण रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है, जो राज्यों की वास्तविक वर्षा के भारित औसत पर आधारित होता है, जहां भारांक को समग्र खाद्यान्न उत्पादन में किसी खास राज्य द्वारा खाद्यान्न उत्पादन के औसत हिस्से के रूप में माना जाता है। इस सूचकांक के अनुसार दक्षिण-पश्चिम मानसून 2010 के दौरान वर्षा पिछले वर्ष के 26 प्रतिशत की तुलना में सामान्य से 2 प्रतिशत कम हुई थी, यद्यपि यह आइएमडी द्वारा समग्र देश के लिए पूर्वानुमानित 102 प्रतिशत एलपीए की वर्षा सामान्य वर्षा पूर्वानुमान की सीमा के भीतर थी (चार्ट 3)। प्रमुख खाद्यान्न उत्पादन करने वाले राज्यों के ज्यादातर जिलों में सामान्य वर्षा और बेहतर बुआई परिस्थितियां खरीफ 2010-11 के दौरान प्रथम अग्रिम अनुमान के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में खाद्यान्न उत्पादन में 10.4 प्रतिशत की अनुमानित वृद्धि में परिलक्षित हुआ।

जलाशय स्थिति

भारत में केंद्रीय जल आयोग 81 प्रमुख जलाशयों में, जिनमें 151.77 बिलियन घन मीटर का पूर्ण जलाशय स्तर होता है, जल भंडार पर निगरानी रखता है, जो देश की कुल जलाशय क्षमता



के लगभग 67 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार होता है। 30 सितंबर 2010 की स्थिति के अनुसार इन प्रमुख 81 जलाशयों में जल का भंडार (क्षमता के अनुसार भंडार) पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान 60 प्रतिशत की तुलना में एफआरएल का 75 प्रतिशत था। पिछले दस वर्षों के दौरान क्षमता के अनुसार भंडारण का औसत 66 प्रतिशत था (सारणी 4)।

बुआई की प्रगति

जून-सितंबर 2010 के दौरान मानसून का बेहतर प्रदर्शन खरीफ की बुआई में परिलक्षित हुआ। बुआई

सारणी 4: जलाशय स्थिति

निम्नानुसार स्थिति	30.09.2005 (76 जलाशय)	01.10.2006 (81 जलाशय)	01.10.2007 (81 जलाशय)	01.10.2008 (81 जलाशय)	01.10.2009 (81 जलाशय)	30.09.2010 (76 जलाशय)
1	2	3	4	5	6	7
कुल जलाशय क्षमता (बोसीएम)	109.70	133.53	120.12	111.96	90.48	114.45
एफआरएल की क्षमता का प्रतिशत	82	88	79	74	60	75

स्रोत: केन्द्रीय जल आयोग

1 100 का पीआरएन सामान्य वृष्टि दर्शाता है, जहां सामान्य पिछले 10 वर्षों की भारित वृष्टि का औसत परिलक्षित करता है।

की अद्यतन स्थिति ने यह दर्शाया कि 22 अक्टूबर 2010 की स्थिति के अनुसार चालू खरीफ मौसम में सभी फसलों की बुआई पिछले वर्ष के 92.6 प्रतिशत की तुलना में सामान्य स्तर के 99.0 प्रतिशत स्तर पर थी। खाद्यान्नों के अंतर्गत खरीफ की बुआई पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के 88.8 प्रतिशत की तुलना में सामान्य क्षेत्र का 95.5 प्रतिशत थी। परिणामस्वरूप,

प्रथम अग्रिम अनुमानों के अनुसार 2010-11 में 114.6 मिलियन टन खरीफ खाद्यान्नों के उत्पाद का अनुमान है, जो कि 2009-10 के दौरान 103.8 मिलियन टन के खरीफ खाद्यान्नों के उत्पादन से 10.4 प्रतिशत अधिक था। खाद्यान्नों, कुल तिलहन, कपास और गन्ने की सभी उप-श्रेणियों में बढ़ी हुई पैदावार का अनुमान लगाया गया है।

सारणी 1.2: बुवाई किया गया और खरीफ फसलों के अंतर्गत उत्पादन क्षेत्र

(क्षेत्र लाख हेक्टेयर में और उत्पादन मिलियन टन में)

फसल	बुवाई				2010 सामान्य प्रतिशत	उत्पादन	
	सामान्य	2008-09	2009-10	2010-11*		2009-10\$	2010-11@
1	2	3	4	5	6	7	8
चावल	395.10	386.18	332.87 (-13.8)	355.12 (6.7)	89.9	75.91 (-10.6)	80.41 (5.9)
कुल मोटे अनाज	222.23	199.85	206.16 (3.2)	212.16 (2.9)	95.5	23.63 (-17.2)	28.23 (19.5)
कुल अनाज	617.33	586.03	539.03	567.28	91.9	99.54	108.64
कुल दालें जिनमें से	107.94	104.78	104.97 (0.2)	125.32 (19.4)	116.1	4.30 (-8.2)	6.00 (39.5)
तुअर	35.53	34.58	36.48	44.86	126.3	2.55	3.27
उड़द	22.82	21.97	22.92	25.54	112.0	0.85	1.08
मूंग	26.14	24.12	24.79	29.80	114.0	0.44	0.88
कुल खाद्यान्न	725.27	690.81	644.00 (-6.8)	692.60 (7.5)	95.5	103.84 (-12.1)	114.63 (10.4)
कुल नौ तिलहन जिनमें से	175.72	184.02	174.43	175.49	99.9	15.66	17.27
मूंगफली	53.81	52.87	44.65	49.84	92.6	3.66	5.64
तिल	17.76	15.55	17.62	17.06	96.1	0.66	0.62
सोयाबीन	84.00	96.42	95.82	93.35	111.1	10.05	9.81
काटन #	90.86	90.92	100.09 (10.1)	108.47 (8.4)	119.4	23.94 (7.4)	33.50 (40.0)
जूट # #	7.85	7.37	6.92 (-6.1)	7.59 (9.7)	112.5	10.70 (11.1)	9.69 (-9.5)
गन्ना	44.97	44.15	42.02 (-4.8)	50.60 (20.4)	96.7	277.75 (-2.6)	324.91 (17.0)
सभी फसलें	1044.67	1017.27	967.46 (-4.9)	1034.75 (7.0)	99.0		

\$ चौथा अग्रिम अनुमान @ प्रथम अग्रिम आकलन * 22 अक्टूबर के अनुसार

170 कि. ग्रा. प्रत्येक की मिलियन गांठें

180 कि. ग्रा. प्रत्येक की मिलियन गांठें

टिप्पणी: कोष्ठक में दिय गए आंकड़े पिछले वर्ष के दौरान प्रतिशत घटबढ़ दर्शाते हैं।

स्रोत: कृषि मन्त्रालय, भारत सरकार

लेख

दक्षिण-पश्चिम मानसून
2010 : एक समीक्षा
(1 जून से
30 सितम्बर 2010)

विवरण I: वर्षा संबंधी मौलिक आंकड़े (संचयी)								
उप प्रभाग	1 जून से 30 सितंबर 2010				1 जून से 30 सितंबर 2009			
	वास्तविक (मि.मी.)	सामान्य (मि.मी.)	सामान्य से प्रतिशत अंतर		वास्तविक (मि.मी.)	सामान्य (मि.मी.)	सामान्य से प्रतिशत अंतर	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. अंदमान तथा निकोबार द्वीपसमूह	1769.5	1693.1	5	एन	1671.8	1755.2	-5	एन
2. अरुणाचल प्रदेश	1589.3	1709.5	-7	एन	1323.9	1834.9	-28	डी
3. असम और मेघालय	1501.3	1951.6	-23	डी	1320.9	1885.3	-30	डी
4. नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम और त्रिपुरा	1277.1	1398.7	-9	एन	822.5	1240.9	-34	डी
5. उप हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम	2194.0	1925.7	14	एन	1529.5	1955.4	-22	डी
6. पश्चिमी बंगाल का गांगेय क्षेत्र	788.0	1140.6	-31	डी	973.7	1136.3	-14	एन
7. उड़ीसा	992.7	1169.3	-15	एन	1167.3	1164.9	0	एन
8. झारखंड	644.0	1084.4	-41	डी	799.6	1092.5	-27	डी
9. बिहार	794.0	1024.3	-22	डी	736.3	1039.2	-29	डी
10. पूर्वी उत्तर प्रदेश	702.1	909.6	-23	डी	563.1	913.6	-38	डी
11. पश्चिमी उत्तर प्रदेश	771.5	771.0	0	एन	442.6	772.8	-43	डी
12. उत्तराखंड	1690.3	1208.1	40	ई	864.9	1223.1	-29	डी
13. हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली	565.5	467.3	21	ई	290.7	470.0	-38	डी
14. पंजाब	459.0	495.7	-7	एन	323.6	501.8	-36	डी
15. हिमाचल प्रदेश	882.6	773.9	14	एन	494.2	773.7	-36	डी
16. जम्मू और कश्मीर	673.9	524.2	29	ई	337.6	513.6	-34	डी
17. पश्चिमी राजस्थान	443.1	262.5	69	ई	155.4	262.8	-41	डी
18. पूर्वी राजस्थान	660.9	630.3	5	एन	436.8	623.6	-30	डी
19. पश्चिमी मध्य प्रदेश	752.1	903.4	-17	एन	657.0	904.3	-27	डी
20. पूर्वी मध्य प्रदेश	919.9	1087.5	-15	एन	738.2	1097.4	-33	डी
21. गुजरात क्षेत्र, दमन, दादर और नगर हवेली	1011.1	910.4	11	एन	613.4	933.6	-34	डी
22. सौराष्ट्र और कच्छ	1005.9	487.1	107	ई	612.8	485.7	26	ई
23. कोंकण और गोवा	3437.4	2799.5	23	ई	2316.4	2802.1	-17	एन
24. मध्य महाराष्ट्र	838.5	701.1	20	ई	683.6	700.1	-2	एन
25. मराठवाड़ा	904.1	711.1	27	ई	529.7	704.3	-25	डी
26. विदर्भ	1216.3	974.9	25	ई	661.9	976.2	-32	डी
27. छत्तीसगढ़	1034.6	1203.2	-14	एन	796.3	1205.8	-34	डी
28. तटीय आंध्र प्रदेश	836.7	575.3	45	ई	429.6	575.2	-25	डी
29. तेलंगाना	1013.3	766.6	32	ई	497.9	767.3	-35	डी
30. रायलसीमा	518.9	380.8	36	ई	390.1	380.9	2	एन
31. तमिलनाडु और पुदुचेरी	403.8	313.7	29	ई	314.8	315.6	0	एन
32. तटीय कर्नाटक	3245.3	3174.1	2	एन	3469.1	3173.9	9	एन
33. उत्तरी भीतरी कर्नाटक	617.3	491.0	26	ई	601.3	490.9	22	ई
34. दक्षिणी भीतरी कर्नाटक	742.2	672.2	10	एन	855.3	659.3	30	ई
35. केरल	1933.3	2139.7	-10	एन	1959.4	2143.0	-9	एन
36. लक्षद्वीप	1152.6	985.2	17	एन	1026.4	985.2	4	एन
ई			14				3	
एन			17				10	
डी			5				23	
एस			0				0	
एनआर			0				0	
कुल			36				36	

स्रोत : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

विवरण II: दक्षिण पश्चिम मानसून 2010 के दौरान अधिक, सामान्य, कम, छिटपुट और
शून्य वर्षा वाले जिलों की संख्या का राज्यवार वितरण

अवधि: 01.06.2010 से 30.09.2010

क्र. सं.	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	ई	एन	डी	एस	एनआर	एनडी	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	अंदमान तथा निकोबार द्वीपसमूह (केंद्र शासित प्रदेश)	1	2	0	0	0	0	3
2.	अरुणाचल प्रदेश	2	5	3	1	0	5	16
3.	असम	4	13	7	0	0	3	27
4.	मेघालय	0	2	1	1	0	3	7
5.	नागालैंड	0	2	0	0	0	9	11
6.	मणिपुर	0	1	0	0	0	8	9
7.	मिजोरम	0	1	0	0	0	8	9
8.	त्रिपुरा	0	1	3	0	0	0	4
9.	सिक्किम	0	2	1	0	0	1	4
10.	पश्चिम बंगाल	3	5	11	0	0	0	19
11.	उड़ीसा	2	13	15	0	0	0	30
12.	झारखंड	0	2	18	4	0	0	24
13.	बिहार	4	5	29	0	0	0	38
14.	उत्तर प्रदेश	9	28	31	3	0	0	71
15.	उत्तराखंड	10	3	0	0	0	0	13
16.	हरियाणा	10	9	2	0	0	0	21
17.	चंडीगढ़ (केंद्र शासित प्रदेश)	1	0	0	0	0	0	1
18.	दिल्ली	6	2	0	0	0	1	9
19.	पंजाब	3	12	4	1	0	0	20
20.	हिमाचल प्रदेश	4	7	1	0	0	0	12
21.	जम्मू और कश्मीर	9	8	1	1	0	3	22
22.	राजस्थान	17	11	5	0	0	0	33
23.	मध्य प्रदेश	2	21	27	0	0	0	50
24.	गुजरात	12	11	3	0	0	0	26
25.	दादरा तथा नगर हवेली एवं दमन (केंद्र शासित प्रदेश)	0	2	0	0	0	0	2
26.	दीव (केंद्र शासित प्रदेश)	1	0	0	0	0	0	1
27.	गोवा	1	1	0	0	0	0	2
28.	महाराष्ट्र	24	9	2	0	0	0	35
29.	छत्तीसगढ़	1	11	6	0	0	0	18
30.	आंध्र प्रदेश	19	4	0	0	0	0	23
31.	तमिलनाडु	14	18	0	0	0	0	32
32.	पुदुचेरी (केंद्र शासित प्रदेश)	2	0	0	0	0	2	4
33.	कर्नाटक	12	16	1	0	0	0	29
34.	केरल	0	12	2	0	0	0	14
35.	लक्षद्वीप (केंद्र शासित प्रदेश)	0	1	0	0	0	0	1
	कुल	173	240	173	11	0	43	640

ई : अधिक

एन : सामान्य

डी : कम

एस : छिटपुट

एनआर : शून्य वर्षा

एनडी : आंकड़े नहीं

स्रोत : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।